JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बौद्ध धर्म में दासी की समस्या एवं स्थिति

प्रिया कुमारी[1] एवं डॉ0 कृष्ण कुमार मंडल[2]

[1]शोधार्थी

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर&812007

[2]एसोसिएट प्रोफेसर

इतिहास विभाग

जे0पी0 कॉलेज , नारायणपुर, भागलपुर

तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर&812007

शोध–सार

बौद्ध धर्म में समाज की विभिन्न जातियों और वर्गों के लोगों के प्रति समता, सहानुभूति और करुणा का विशेष महत्व है। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने जाति, लिंग और सामाजिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को नकारा। उनका उद्देश्य सभी प्राणियों के लिए मुक्ति, शांति और समता का संदेश फैलाना था। हालांकि, बौद्ध धर्म के शुरुआती समय में दास प्रथा मौजूद थी, लेकिन बुद्ध के उपदेशों में दासों के प्रति अधिक मानवीय दृष्टिकोण अपनाने का संदेश दिया गया है। उन्होंने दासों के साथ उचित व्यवहार, करुणा और समानता का आह्वान किया। गौतम बुद्ध ने कहा था कि सभी मनुष्य समान हैं, और जाति या सामाजिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव गलत है। उन्होंने समाज के सभी वर्गों को, चाहे वह दासी हो या उच्च वर्ग के लोग, धर्म के समान अधिकार दिए।

शब्दकुंजी : भेदभाव, समानता, करुणा, अहिंसा, दासता और सेविका आदि

भूमिका :

बौद्ध धर्म में समाज की विभिन्न जातियों और वर्गों के लोगों के प्रति समता, सहानुभूति और करुणा का विशेष महत्व है। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने जाति, लिंग और सामाजिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को नकारा। उनका उद्देश्य सभी प्राणियों के लिए मुक्ति, शांति और समता का संदेश फैलाना था। हालांकि, बौद्ध धर्म के शुरुआती समय में दास प्रथा मौजूद थी, लेकिन बुद्ध के उपदेशों में दासों के प्रति अधिक मानवीय दृष्टिकोण अपनाने का संदेश दिया गया है। उन्होंने दासों के साथ उचित व्यवहार, करुणा और समानता का आह्वान किया। गौतम बुद्ध ने कहा था कि सभी मनुष्य समान हैं, और जाति या सामाजिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव गलत है। उन्होंने समाज के सभी वर्गों को, चाहे वह दासी हो या उच्च वर्ग के लोग, धर्म के समान अधिकार दिए।

बौद्ध धर्म में दासी या सेविकाओं का कोई विशेष धार्मिक महत्व नहीं है, क्योंकि बौद्ध धर्म का मुख्य ध्यान आत्मज्ञान, करुणा, और सभी प्राणियों के प्रति समानता पर केंद्रित है।[1] बौद्ध धर्म ने किसी प्रकार की सामाजिक स्थिति या वर्ग भेद को महत्व नहीं दिया, बल्कि सामाजिक समानता और सभी जीवों के प्रति दया और करुणा की वकालत की। यदि हम बौद्ध धर्म

की शिक्षाओं को देखें, तो बुद्ध ने विशेष रूप से यह सिखाया कि सामाजिक भेदभाव और वर्ग विभाजन से मुक्त होकर जीवन जीना चाहिए। सभी प्राणी समान हैं, चाहे वह राजा हो या सेवक, गरीब हो या अमीर। बौद्ध धर्म की मूलभूत शिक्षाओं में आष्टांगिक मार्ग, चार आर्य सत्य, और ध्यान पर ध्यान केंद्रित होता है, जो जीवन के दुखों से मुक्ति पाने और निर्वाण प्राप्त करने का मार्ग है। इसलिए दासी जैसी अवधारणाओं का बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक सिद्धांतों में कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है।[2] यह अवधारणा मुख्य रूप से सामाजिक ढांचे से संबंधित होती है, जबकि बौद्ध धर्म का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को सभी प्रकार के भेदभाव से मुक्त कर आत्मज्ञान की ओर अग्रसर करना है।[3]

बौद्ध धर्म में दासी या सेवक वर्ग पर भी गहरा प्रभाव देखा गया है, क्योंकि बौद्ध धर्म ने करुणा, समानता और मानवता के सिद्धांतों को प्राथमिकता दी है। समाज में चाहे दासी या सेवक किसी भी वर्ग के क्यों न हों, बौद्ध धर्म ने उन्हें भी आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष की राह पर चलने का समान अधिकार दिया है। बौद्ध धर्म के अनुसार, किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति या उसका पेशा उसके आध्यात्मिक विकास में बाधा नहीं डाल सकता। यह धर्म कर्म और आचरण पर अधिक ध्यान देता है और समाज के निम्न वर्ग के लोग भी अगर धर्म के सिद्धांतों का पालन करते हैं उसे अहिंसा, सही दृष्टिकोण, सही आचरण, और सही ध्यानकृतो वे भी निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं। दासी या सेवकों के प्रति किसी भी प्रकार का भेदभाव करने की बजाय, बौद्ध धर्म सभी प्राणियों के प्रति करुणा और सहिष्णुता का व्यवहार करने की शिक्षा देता है। बौद्ध धर्म में कई बार यह देखा गया कि निम्न वर्ग, जिनमें दासी और सेवक शामिल थे, बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित होकर धर्म का मार्ग अपनाते थे।[4] ऐसा इसलिए भी हुआ क्योंकि बौद्ध धर्म ने वर्ण या जाति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया और सभी को धर्म के मार्ग पर चलने का समान अवसर प्रदान किया।

बौद्ध धर्म में दासी की स्थिति :

1. **समानता का सिद्धांत :** बौद्ध धर्म में करुणा और अहिंसा के सिद्धांतों के आधार पर दासी को भी एक मनुष्य के रूप में समान दर्जा दिया जाता है। भले ही सामाजिक ढांचे में उनकी स्थिति निम्न हो, धार्मिक दृष्टिकोण से उन्हें भी आध्यात्मिक प्रगति करने का अधिकार प्राप्त होता है।

2. **धर्म और मोक्ष का अधिकार :** बौद्ध धर्म में किसी भी व्यक्ति को मोक्ष और धर्म का पालन करने से रोका नहीं जा सकता, चाहे वह दासी ही क्यों न हो। बौद्ध मठों में सभी जाति–वर्ग के लोगों को दीक्षा लेने का समान अधिकार प्राप्त था, और स्त्रियों के लिए विशेष रूप से भिक्षुणी संघ की स्थापना की गई थी, जिसमें दासियों को भी जगह दी जाती थी।

3. **नारी और दासी अधिकार :** बुद्ध ने समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने की दिशा में भी काम किया। बुद्ध के समय में स्त्रियों और दासियों को सामाजिक और धार्मिक स्तर पर निम्न माना जाता था, लेकिन उन्होंने महिलाओं को धार्मिक जीवन में सक्रिय भागीदारी का अवसर दिया।

4. **दासता के खिलाफ बुद्ध के उपदेश :** बुद्ध ने दासता को सामाजिक बुराई के रूप में नहीं, बल्कि एक गलत व्यवस्था के रूप में देखा। उन्होंने इस व्यवस्था को समाप्त करने की ओर कोई प्रत्यक्ष प्रयास नहीं किया, लेकिन उनके अनुयायी धीरे–धीरे दासता के विरोधी बने और दासों को स्वतंत्रता और गरिमा देने का प्रयास किया।[5]

सामाजिक समरसता और मुक्ति का संदेश :

बौद्ध धर्म ने दासियों और सेवक वर्ग को केवल समाज में उनके स्थान से परे देखने की शिक्षा दी। बौद्ध धर्म ने मानव मात्र की समानता का प्रचार किया, जिसमें यह समझाया गया कि आंतरिक शुद्धि और नैतिक आचरण ही किसी व्यक्ति की

वास्तविक पहचान होती है, न कि उसकी सामाजिक स्थिति। इस प्रकार बौद्ध धर्म ने दासी और सेवक वर्ग को भी समाज के अन्य वर्गों की तरह आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया।[6]

बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत करुणा, मैत्री (सभी प्राणियों के प्रति प्रेम), और अहिंसा पर आधारित हैं। यह सिखाया गया है कि सभी मनुष्यों को उनके सामाजिक दर्जे, पेशे, या परिस्थितियों की परवाह किए बिना समान अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए। बौद्ध भिक्षुओं और अनुयायियों से अपेक्षा की जाती है कि वे किसी के साथ भी दया, करुणा, और प्रेमपूर्ण तरीके से व्यवहार करें।[7]

न्याय और समानता :

1. **करुणा और मैत्री :** बौद्ध धर्म में करुणा सभी प्राणियों के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। चाहे व्यक्ति दासी हो या राजा, उनके प्रति समान करुणा और सहानुभूति का भाव होना चाहिए।

2. **अनिच्चा (वैराग्य) :** बौद्ध धर्म में यह सिखाया गया है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है और इसी के साथ कोई भी सामाजिक स्थिति भी स्थायी नहीं है। इसलिए, किसी भी व्यक्ति को उसकी सामाजिक स्थिति के आधार पर आंकना अनुचित है।[8]

3. **कर्म और पुनर्जन्म :** बौद्ध धर्म के अनुसार, कर्म के आधार पर व्यक्ति का भविष्य निर्धारित होता है, न कि उसकी सामाजिक स्थिति के आधार पर। इसलिए दासी या किसी अन्य व्यक्ति के साथ अन्याय करना बौद्ध सिद्धांतों के विपरीत है।

4. **समानता और सामाजिक सुधार :** बुद्ध ने समाज में फैले भेदभाव का विरोध किया और समाज के सभी वर्गों के साथ समानता का व्यवहार किया। बौद्ध धर्म में दासत्व की अवधारणा का कोई स्थान नहीं है और किसी भी प्रकार का अन्यायपूर्ण शोषण बौद्ध सिद्धांतों के विपरीत है।[9]

बौद्ध धर्म में दासी के साथ न्याय का मतलब है उसके साथ एक इंसान के रूप में समान और सम्मानजनक व्यवहार करना। बौद्ध धर्म के अनुसार किसी भी व्यक्ति के साथ उसके सामाजिक दर्जे के आधार पर भेदभाव करना गलत है और उसे भी वही सम्मान, करुणा, और अवसर मिलना चाहिए जो समाज के किसी अन्य व्यक्ति को प्राप्त होते हैं।[10]

बौद्ध धर्म में दासी की समस्या :

बौद्ध धर्म में दासी की समस्या एक सामाजिक मुद्दा है, न कि धार्मिक। बौद्ध धर्म का मुख्य उद्देश्य आत्मज्ञान, करुणा, और समानता को बढ़ावा देना है। हालांकि, प्राचीन समाज में दासी सामाजिक संरचना का हिस्सा थीं, लेकिन बौद्ध धर्म में उन्हें सामाजिक भेदभाव या अन्याय का शिकार बनाना बौद्ध शिक्षाओं के विपरीत है।[11] बौद्ध धर्म ने स्पष्ट रूप से करुणा, समानता, और न्याय को प्रोत्साहित किया, जिससे दासी जैसी संस्थाओं के खिलाफ एक नैतिक और आध्यात्मिक प्रतिरोध पैदा होता है :–

1. **सामाजिक असमानता :** बौद्ध धर्म के समय में समाज में दासता, सेवक–सेविका व्यवस्था और वर्गभेद जैसी समस्याएं मौजूद थीं। हालांकि बुद्ध ने इन सामाजिक असमानताओं की निंदा की और सभी व्यक्तियों को समान दृष्टि से देखने की शिक्षा दी, लेकिन उस समय की सामाजिक व्यवस्था में ये समस्याएं बनी रहीं।

2. **बौद्ध धर्म का दृष्टिकोण :** बुद्ध की शिक्षाएं करुणा, दया और अहिंसा पर आधारित हैं। उनके अनुसार, सभी प्राणी समान हैं और किसी के प्रति हिंसा या अन्यायपूर्ण व्यवहार करना गलत है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए, तो दासता या किसी व्यक्ति को सेविका के रूप में शोषण करना बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के खिलाफ है।[12]

3. **दासता के खिलाफ शिक्षाएं :** बौद्ध धर्म ने सामाजिक रूप से कमजोर और उत्पीड़ति वर्गों के साथ समान व्यवहार और सम्मान की शिक्षा दी। कई बौद्ध ग्रंथों में यह उल्लेख मिलता है कि बुद्ध ने उन लोगों की मदद की जो शोषित थे, चाहे वे किसी भी वर्ग से हों। यह दर्शाता है कि बौद्ध धर्म दासता के विरुद्ध और समानता के पक्ष में खड़ा था।

4. **कर्म और पुनर्जन्म :** बौद्ध धर्म में कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत के अनुसार, हर व्यक्ति के अच्छे या बुरे कर्म उसके भविष्य को निर्धारित करते हैं। दासी या सेविकाओं के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करने से व्यक्ति का कर्म बिगड़ता है, जो उनके अगले जन्मों में दुख का कारण बन सकता है। इसलिए, बौद्ध धर्म शोषण या अन्याय को हतोत्साहित करता है।

5. **समाज में बदलाव की संभावना :** बौद्ध धर्म ने यह सिखाया कि समाज में बदलाव संभव है और व्यक्ति अपने आचरण को सुधार कर समाज में समानता और न्याय की स्थापना कर सकता है। बुद्ध के अनुयायियों में कई बार दासी और सेविका जैसी भूमिकाओं में रह चुके लोग भी शामिल हुए, जिन्हें बौद्ध समुदाय में समान सम्मान और अवसर प्राप्त हुए।

बौद्ध धर्म में दासी की समस्या का समाधान आत्मिक समानता, करुणा, और अहिंसा के माध्यम से किया जाता है। बौद्ध धर्म के अनुसार, दासता या सेविका जैसी व्यवस्थाएं अन्यायपूर्ण हैं, और इन्हें सामाजिक ढांचे में परिवर्तन के द्वारा समाप्त किया जाना चाहिए। बुद्ध ने सभी व्यक्तियों को समान दृष्टि से देखने की शिक्षा दी और समाज के कमजोर और शोषित वर्गों के लिए सहानुभूति और न्याय की बात की। बौद्ध धर्म में दास और दासियों को धार्मिक दृष्टि से किसी प्रकार की कमतरता का अनुभव नहीं कराया गया। हालांकि बौद्ध धर्म के दौरान सामाजिक व्यवस्था में दास प्रथा का अस्तित्व था, परंतु बुद्ध के विचारों और उपदेशों ने समाज में दासों के साथ मानवीय दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। बौद्ध मठों और धर्म में दासियों को भी उतनी ही इज्जत दी जाती थी जितनी अन्य किसी व्यक्ति को।

संदर्भ–सूची :

1. भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण – भगवत शरण उपाध्याय – पृ0231
2. धर्म शास्त्र का इतिहास भाग –1 पृ० 116
3. ऋग्वेद 8/19/36
4. ऋग्वेद 8/19/36
5. विनय पिटक (महावग्ग) 8/1/1, पृ0 266–67
6. विनय पिटक (चुल्लवग्ग) 4/2/1 पृ0 397
7. अंगुत्तर निकाय, भाग? –3 पृ0 225
8. थेरीगाथा 65/2346, पृ086
9. मज्झिमनिकाय 1/167–168
10. जातक भाग–1 पृ0 433
11. सत्तुभस्त जातक (402)
12. विनय पिटक में भारतीय समाज–डा० दिवाकर लाल श्रीवास्तव